भारतीय संस्कृति में राष्ट्रीय तत्व

डॉ. कामिनी वर्मा

प्रकाशक

नम्या प्रेस

213, वर्धन हाउस, 7/28, अंसारी रोड,
दरिया गंज, दिल्ली - 110002
ई–मेलः namyapress@gmail.com

संस्करण	:	प्रथम में प्रकाशित 2020 नम्या प्रेस
शीर्षक	:	भारतीय संस्कृति में राष्ट्रीय तत्व
लेखिका	:	डॉ० कामिनी वर्मा
आईएसबीएन	:	978-93-90124-76-3
मूल्य	:	₹ 995.00
कॉपीराइट	:	© डॉ० कामिनी वर्मा 2020 सर्वाधिकार सुरक्षित
मुद्रक	:	ट्राईडेंट एन्टेर्प्रिसिस (नॉएडा) डी – 204, सेक्टर – 10 नौएडा, गौतम बुद्ध नगर, यू०पी०

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसका व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप से उपयोग नहीं किया जा सकता। इन्हे पुनः प्रकाशित कर विक्रय या किराए पर नहीं दिया जा सकता है तथा जिल्दबंद अथवा किसी भी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। यह सभी शर्तें पुस्तक के खरीदार पर भी लागू है।

6

भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय नदी गंगा

डॉ० सविता भारद्वाज

प्राचार्य, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, उ०प्र०

विश्व की प्राचीनतम जीवन्त संस्कृति के रूप में समादृत भारतीय संस्कृति उदारचेता हैं। यह समूची वसुधा को अपना कुटुम्ब मानती हैं। मातृ भूमि की वन्दना करती हैं। भूमि को माँ की तरह पूजती हैं इसके जन माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या का गायन करते हैं। इसमें कण–कण में उस असीम का दर्शन किया जाता हैं। यह समस्त सृष्टि के प्रति ममत्व और सम्वेदना का भाव रखती हैं। सभी में अपनत्व का बोध रखती हैं इसमे मानव की गरिमा उसके कल्याण के साथ–साथ जीव, जगत, वनस्पति, पादप पुष्प सभी के प्रति करूणा और स्नेह का भाव है। यह प्राकृतिक शक्तियों को पूजती है। उसके साथ आत्मीय सम्बन्ध की संवाहिका हैं। यह सूर्य, चन्द्र, मारूत, अग्नि, वनस्पति, नदी, सबके प्रति अगाध आस्था रखती है। उनकी सुरक्षा और संरक्षण करती है। भारतीय संस्कृति के वैशिष्ट्य की गाथा से पूर्व यह अपेक्षित हैं कि संस्कृति शब्द की शास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत् की जाए।

जाते हैं। इस तरह से गंगा एक बहुत बड़े मनोविज्ञानी और मनोचिकित्सक की भूमिका में भी है। जो अवसाद से मुक्त समुदाय की निर्मिति में बड़ी भूमिका का निर्वाह कर रहीं हैं। यदि गंगा नही तो जीवन की कल्पना कठिन है। मुक्ति का प्रश्न तो द्वैतियक है पहले जीवन की बात है जहॉ जल है वहीं जीवन है और फिर गंगा से सुधारसम जल जो अपने अन्तर में मूल्यवान औषधियों की गुणवत्ता लिए है। गंगा की निर्मलता के साथ–साथ अविरलता का प्रश्न विकराल है। मोक्षदायिनी निर्वन्ध मुक्तिप्रदा हो सकती हैं। करोड़ों लोगो की मुक्ति का प्रश्न अनुत्तरित रह जाएगा यदि गंगा वही तो जीव की बात कैसे होगी जिसकी लहर साक्षात क्षेम की संवाहिका हो जो कलि के समस्त भवबन्धों को काटने वाली हैं, वह सुधामयि गंगा को अपने गौरवमय अतीत की तलाश होने लगी है क्योकि आज गंगा राष्ट्रनदी होने के बावजूद वह राष्ट्रीय अधिकार नही प्राप्त कर सकी है जिनसे उनकी मुक्ति के साथ–साथ मानव मुक्ति के प्रश्न का सार्थक समाधान हो सके।

संदर्भ

- छान्देग्य उपनिषद 8/4/1
- प्रबन्ध प्रकाश भाग 2 पृष्ठ 8
- पृष्ठ 101 डॉ. जी.सी. पाण्डेयः भारतीय समाज तात्विक और ऐतिहासिक विवेचन, प्रकाशन–नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियगंज, नई दिल्ली, ISBN 81.214.0550.5
- पृष्ठ 102 वही
- पृष्ठ 46 डॉ. कर्ण सिंह : हिन्दू दर्शन एक समकालीन दृष्टि भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण–2001 ISBN 81.263.6696.3
- पृष्ठ 149, डॉ. एन के देवराज : दर्शन धर्म अध्यात्म और संस्कृति, भारतीय ज्ञानपीठ – (2005 इंस्टीट्यूट, शनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली ISBN 81.263.0855.0
- कूर्म पुराण

- ऋग् 10.140.8 पृष्ठ 31 महादेवी वर्मा, भारतीय संस्कृति के स्वर, राजपाल एण्ड संस, सं. 2008 कश्मीरी गेट, दिल्ली ISBN 978.81. 7028.175.7
- पृष्ठ 31 वही
- दैनिक जागरण
- पृष्ठ 33 महादेवी वर्मा सं. के स्वर
- पृष्ठ 2 गंगालहरी कवि (पद्माकर कृत) सम्पा. सुधाकर पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा काशी प्र संस्करण वि. सम्वत् 2040
- पृष्ठ 3 वही
- पृष्ठ 3 वही
- वही
- वही
- पृष्ठ 36 वही
- कबिकाल को कहर जम जाल को जहर है।